डा विंची कोड का लेखक : मानसिक गंदगी का शिकार

डा विंची कोड फिल्म के विषय में वैचारिक मतभेद पाये जाते हैं । यह फिल्म डॅन ब्राऊन के उपन्यास डा विंची कोड पर आधारित है । इस लेखक ने अपने उपन्यास में यीशु के विरोध में कहने की हिम्मत इसलिये की, क्योंकि वह जानता है कि मसीह के विरोध में घृणित बातें करने पर भी उसके विरूध्द मसीह लोग फतवा जारी नहीं करेंगे ।

यीशु मसीह नासरी के ऊपर हमले करना कोई नई बात नहीं है । जब यीशु इस दुनिया में थे, अपने भाईयों यहूदियों तथा रोमियों के व्दारा गलत समझे गये ।

'तालमुड' (बेबिलोन अंक)ने यीशु मसीह के विषय में सैकड़ों वर्ष बाद उन पर जादूगर तथा व्यभिचारी होने का दोष लगाया था । १९८८ में सबसे बड़ा हमला यीशु के चरित्र पर किया गया, जब ''द लास्ट टेंप्टेशन ऑफ क्राईस्ट'' नामक मार्टिन सीओरसेस व्दारा निर्मित फिल्म दिखाई गई ।

डॅन बाऊन एक भ्रमित व्यक्ति प्रतीत होता है । एक तरफ तो वह कहता है कि यह पुस्तक केवल कल्पना मात्र है और दूसरी तरफ यह कि इसमें पाया जानेवाला कला-शास्त्र, इसकी शैली, साहित्य तथ रहस्यमय विधियाँ सब एक दम सही हैं । मई २००६, कान्स, फ्रॉस में रिलीज़ होने वाली इस फिल्म के प्रीमियर की शुरूआत जिन शब्दों से हुयी थी, वे थे - ''सत्य को ढूंढो''।

लोग काल्पनिक उपन्यास पढ़कर या इस पर आधारित फिल्म को देखकर सत्य को कैसे ढूँढ पायेंगे ? कल्पना एक ऐसी कहानी है, जिसमें वास्तविकता और सच्चाई नहीं होती है । इसलिये काल्पनिक लेख को पढ़कर कोई भी सत्य नहीं जान सकता ।

उपन्यासकार व्दारा इस्तेमाल किये गए स्त्रोत

इस उपन्यास में टीबिंग जो की एक काल्पनिक इतिहासकार है, ''ऐतिहासिक रेकॉर्ड'', ''न बदले गये सुसमाचार'' तथा ''आरम्भिक मसीही रेकार्ड'' का उल्लेख कर अपनी बातों को सिध्द करना चाहता है ।

आरंभिक चर्च को झूठी शिक्षाओं तथा झूठे शिक्षकों के विरूध्द संघर्ष करना पड़ा था । उनमें से नॉस्टीसिज़्म (गूढ़ज्ञानवाद) नामक गलत-सलत शिक्षा, उस समय क्रिश्चयन समाज के अंदर घुसने की कोशिश कर रही थी ।

क्रिश्चयन युग में असामान्य, रंगी हुई, आकर्षक बनाई गई, यह धार्मिक विचारधारा ग्रीको-रोमन समय में शताब्दियों तक प्रचिलित थी, जिसे धार्मिक इतिहासकारों ने 'नॉस्टीसिज़्म' नाम दिया । अपने हर रूप में यह शिक्षा क्रिश्चयन मत के लिए एक खतरा बनी हुयी थी । यह सच है की शुरूआती दौर में क्रिश्चयन लागों ने अपने ''विश्वास'' को प्रगट करने के लिए कुछ चिन्ह और शब्दप्रणाली नॉस्टीसिज़्म (गूढ़ज्ञानवाद) से उधार लिए ।

'नॉस्टीसिज़्म' का मूल अनेक प्रकार के ज्ञानपूर्ण सिध्दांतों में पाया जाता है । किंतु अधिकांश लोग इस विचार को रखते हैं कि यह मसीही युग के पूर्व पाये जाने वाले ईजिप्ट, सीरिया और बाबेलोन के रहस्यमय धर्मो का एक सर्वसाधारण संगम है, जो भिन्न भिन्न विचारधाराओं से प्रारंभ हुआ ।

डॅन बाऊन इसी प्रकार के नॉस्टिक साहित्य का ओर इशारा करता है । १९४५ में ईजिप्ट में 'नाग हम्मादी में' यह पाए गये । तकरीबन ५२ पांडुलिपियों में ऐसे अनेक शीर्षक पाये गए जैसे : फिलिप्पुस का सुसमाचार, थोमा का सुसमाचार और सत्य का सुसमाचार आदि । अन्य कुछ पांडुलिपियों जैसे कि याकूब की रहस्यमय पुस्तक, पौलुस का भविष्यसंम्बधी लेख आदि के बारे में यह दावा किया गया, कि वह यीशु मसीह के अनुयायियों व्दारा लिखे गए । पिछले दिनों में टी. वी. के नॅशनल जॉग्रफिक तथा डिस्कवरी चॅनल पर दिखाई जा रही सबसे अधिक विवादास्पद पुस्तक है 'यहूदा का सुसमाचार' । प्रारंभिक चर्च के विचारक और धर्मरक्षक जैसे आइरॅनियस ने दूसरी शताब्दी में पहले से ही इस साहित्य को रद्द कर दिया था ।

३२५ में केवल ४ सुसमाचार (गॉस्पल) ही बाईबिल में शामिल किए गए थे । दूसरें लेखों को क्रिश्चयन विचारकों ने निम्नलिखित कारणों से नकारा था :

१. इसलिए कि उनकी शिक्षा ओल्ड टैस्टामॅन्ट (बाईबल का प्रथम भाग) के अनुरूप नहीं थी ।
२. यह भी कि यीशु मसीह की शिक्षा तथा उनकी शिक्षाओं में मतभेद था ।
३. यीशु मसीह के प्रेरितों के सिध्दांत तथा इन पुस्तकों पाये जानेवाली शिक्षा के बीच तालमेल नहीं था, मतभेद था ।
४. यद्यपि नाम तो चेलों के थे किंतु यीशु मसीह के शिष्यों ने इन पुस्तकों की रचना नहीं की थी ।

इसलिये कि चर्च ने इन पुस्तकों की निंदा कर के रद्द कर दिया था, दोबारा उन मुद्दों को खोलने का प्रश्न ही नहीं उठता । इसलिये इस उपन्यास में जिन लेखों की ओर संकेत किया गया है, वे त्रुटिपूर्ण और दोषपूर्ण हैं । ये हमारे व्यवहार तथा जीवन में विश्वास के लिए बिल्कुल भी भरोंसेमंद नहीं हैं ।

यीशु सिर्फ एक मानव या दैवीय

ए. डी. ३२५ के आस-पास एरियस नाम एक व्यक्ति था जिसने यूहन्ना रचित सुसमाचार (बाईबल) के १४:२८ में यीशु के कथन का गलत अर्थ लगाया । ''पिता मुझसे बढ़कर हैं'' इस पद व्दारा उसने इस बात को सिखाया, कि यीशु मसीह 'दैवीय' नहीं थे । ***उसके अनुसार*** यीशु पूरी तरह से मात्र 'एक रचना' भी नहीं थे, वह दैवीय और मानवीय के बीच में थे ।

डॅन ब्राऊन का यीशु से सम्बधित धर्मज्ञान, एरियस जैसे लोगों के विचार पर आधारित है । परंतु उस समय की संपूर्ण कलीसिया (चर्च) के व्दारा इस विचार को मान्यता नहीं दी गई थी । डॅन बिल्कुल गलत है क्योंकि उसकी नींव ही सही नहीं है ।

गैर-यूरोपीय लोग 'डॅन को मसीही समझते हैं जिसने न केवल यीशु मसीह की दैवीयता का इन्कार किया है, लेकिन दूसरी तरफ यीशु ख्रिस्त का भिन्न तरीकों से अनादर भी ।

यीशु विवाहित या अविवाहित ?

डॅन की यह अपनी खुद की धारणा है कि यीशु मसीह ने मरियम मगदलनी से विवाह किया और उनकी एक बेटी थी । डॅन बेकार ही अपने बात की सच्चाई साबित करना चाहता है, जब कि इसमें कोई सत्य है ही नहीं । जब मैं यह कहता हूँ तब लिओनार्डो की उस पेंटिंग की ओर इशारा करता हूँ, जिसमें यीशु मसीह अपने शिष्यों के साथ अंतिम भोज ले रहे हैं । यह १६ शताब्दी के एक चित्रकार की कल्पना मात्र है । डॅन ब्राऊन के मतानुसार जो व्यक्ति यीशु की ओर झुका हुआ है वह और कोई नहीं केवल मरियम मगदलनी ही है । 'डा विंची कोड' फिल्म में वह यीशु की रहस्यमय पत्नी तथा उसके बच्चों की माता है ।

बायबल के अनुसार कौन है यह स्त्री ? लूका ८:२ बाईबल में हम पाते हैं कि वह मगदला शहर से थी । यह एक छोटा सा शहर है जो गलील समुद्र के निकट है । वह दुष्टात्मा से पीड़ित थी किंतु इस अवस्था से उसने यीशु के व्दारा आजादी पाई थी (लूका ८:१-३, बाईबल) । यीशु की क्रूस की सजा के समय वह वहाँ उपस्थित थी (मत्ती २७:६१, बाईबल)। अन्य स्त्रियों के साथ वह तीसरे दिन यीशु के मृतक शरीर पर बहुमूल्य द्रव्य लगाने के लिये गई थी ।

यीशु को विवाहित सिध्द करने के लिये डॅन कहता है, कि पहली शताब्दी में शब्द 'साथी' जीवनसाथी (पति/पत्नी) के लिए उपयोग किया जाता था ।

'साथी' शब्द के लिये तीन ग्रीक/यूनानी शब्द हैं :

सुनेकदेमोस - यानि हमसफर

कोईनोनोस - यानि सहभागी

सुमरगोस - साथीदार या सहकर्मी

'साथी' शब्द उपयोग में लाने के बाद यह कहना मूर्खता लगती है की मरियम यीशु की पत्नी थी । यह सच है कि बायबल के अनुसार स्त्रियाँ भी यीशु की शिष्य थीं, ***किन्तु फिर भी उन्हें १२ शिष्यों के मुख्य समूह में शामिल नहीं किया गया था ।***

डॅन ब्राऊन की दृष्टि में यीशु का अविवाहित रहना असंभव था । उसके अनुसार वास्तविक तौर पर देखा जाए तो उनका विवाह होना ही था क्योंकि वह एक यहूदी व्यक्ति थे । डॅन इस झूठी धारणा का भी शिकार है, कि यीशु के यहूदी गुरू या शिक्षक रहने के नाते, उनका विवाह होना अनिवार्य था ।

यह सच है, कि यहूदी समाज में अपेक्षा की जाती थी कि सभी विवाह करें, किंतु हम कहीं भी यह नहीं पाते कि अविवाहित रहना दंड योग्य था, या ब्रम्हचर्य पर पाबंदी थी । क्रिश्चयन चर्च की नई इंटरनेशनल डिक्शनरी के अनुसार, यहूदी संस्कृति में ब्रम्हचर्य या अविवाहित रहना आवश्यक था, परंतु विवाह करना अनिवार्य भी नहीं था ।

शायद कुछ लोगों के हिसाब से कार्य से जुड़ी ज़िम्मेदारियाँ भारी पड़ती थीं, इसलिए लोग अविवाहित रहने का चुनाव करते थे । पौलुस यहूदी था और वह अकेला था । सच तो यह है, कि पौलुस ने अविवाहित होने को परमेश्वर का दान/उपहार कहा, ''अच्छा है कि कोई विवाह न करे, सब मेरे जैसे हों, परंतु हर एक को परमेश्वर की ओर से दान मिले हैं । किसी को किसी प्रकार का वरदान मिला है, किसी को किसी और प्रकार का । पौलुस ने यह भी कहा, कि अविवाहित व्यक्ति परमेश्वर की सेवा पूर्ण क्षमता और समर्पण से कर सकता है'' । वह कहता है, ''कि मैं चाहता हूँ तुम किसी भी सांसारिक चिंता से मुक्त रहो, क्योंकि एक अविवाहित व्यक्ति परमेश्वर की बातों पर ज्यादा ध्यान लगाता है । वह इसी बात की चिंता करता है कि परमेश्वर को कैसे प्रसन्न करे । इसके विरूध्द एक विवाहित व्यक्ति संसारिक बातों की चिंता करता है - अपनी पत्नी को कैसे खुश रखे- उसका ध्यान बट जाता है'' १ कुरि ७:३२-३३ (बाईबल) । पौलुस विवाह के चुनाव को व्यक्ति पर ही छोड़ देता है : देखें १ कुरि. ७:३६-४० (बाईबल) ।

इसलिए डॅन ब्राऊन के इस सिध्दांत का हम खंडन कर सकते हैं कि यीशु ने विवाह किया होगा/था, क्योंकि यह यहूदी पुरूषों के लिए ज़रूरी था । सच्चाई यह है कि यीशु किसी रीति, रिवाज़ और प्रथा के बन्धन में नहीं थे ।, वह कभी कभी अपने समय की रीतियों को ठीक विरूध्द किया करते थे । यीशु ने धार्मिक अगुओं के बहुत से नियमों तथा प्रथाओं को परमेश्वर प्रेरित नहीं, किंतु ''मनुष्यों व्दारा सिखाए गये नियम'' के रूप में ही देखा ।

ऊपर दी गई सच्चाईयाँ इस सत्य को स्थापित करती हैं कि यीशु अविवाहित ही थे । अब मान लीजिए यदि यीशु विवाहित भी होते तब भी इसमें कोई बुराई न होती, क्योंकि विवाह तो पवित्र और सृष्टिकर्ता व्दारा स्थापित है । परन्तु क्रिश्चयन विश्वास के अनुसार सृजनहार इस पृथ्वी पर यीशु में होकर आए, ताकि सारी मानवजाति के लिए बलिदान हो जाएं, इसलिए उनको विवाह करने की आवश्यकता ही नहीं थी ।

हम किसके शब्दों को महत्व देंगे, उनके जो यीशु को जानते थे ? उस समय के इतिहासकार और मसीही विद्वानों के, या फिर एक उपन्यासकार के ? यदि हम यीशु के समकालीन लोगों की बातों को टालकर इस उपन्यासकार की बातें मानें, तो निश्चय ही हम गुमराह हो जाएंगे ।

डॅन ब्राऊन और डा विंची कोड इसलिए सुर्खियों में है, क्योंकि डॅन ब्राऊन ने क्रिश्चयन विश्वास के महत्वपूर्ण मुद्दों को स्पर्श कर लोगों को रोमांचित करने का प्रयत्न किया । उसका उपन्यास या फिल्म इसलिए चर्चा का विषय नहीं है, क्योंकि उसमें कोई वास्तविकता या कलात्मकता है ।

मुझे तो लगता है कि डॅन ब्राऊन पूरे विश्व को गुमराह करने का तो दोषी है ही, साथ ही अपने भ्रष्ट विचारों का गुलाम भी ।

एच. सुरेंद्र सिंग , मोबाईल -९८९०४१६२२६, घर- ०७१२-२५८२८४५